A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

उत्तर बिहार का कीर्तन: भक्ति, संगीत और समाज का बदलता स्वरूप

Vivekanand
Ph.D. Research Scholar, Faculty of Music and Fine Arts, University of Delhi

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 15 June, 2026

Vivekanand. (2026). Uttar Bihar Ka Kirtan: Bhakti, Sangeet Aur Samaj Ka Badalta Swaroop. Swar Sindhu, 14(1), 323-325.

सार

यह लेख उत्तर बिहार के कीर्तन की परंपरा, उसके आध्यात्मिक महत्व तथा उसके बदलते स्वरूप का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्राचीन काल से ही कीर्तन केवल एक संगीतात्मक क्रिया नहीं, बल्कि भक्ति, भाव और ईश्वर से जुड़ने का एक सशक्त माध्यम रहा है। नवधा भक्ति की परंपरा में कीर्तन का विशेष स्थान है, जहाँ सामूहिक गायन के माध्यम से मनुष्य आत्मिक शुद्धि और आनंद की अनुभूति करता है। यह परंपरा संतों और भक्तों के माध्यम से विकसित होकर समाज के जन-जीवन का अभिन्न अंग बन गई, विशेष रूप से अयोध्या, मथुरा जैसे धार्मिक केंद्रों से होते हुए उत्तर बिहार में अत्यंत लोकप्रय हुई। समकालीन समय में, इस पवित्र विधा में कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं। व्यावसायीकरण, दिखावटी प्रवृत्तियों तथा मूल भाव की कमी के कारण इसकी आत्मिक गरिमा प्रभावित हुई है। फिर भी, यह परंपरा आज भी समाज को जोड़ने, सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजने और आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने की क्षमता रखती है। लेख का उद्देश्य कीर्तन की मूल भावना को पुनः स्थापित करने और उसके शुद्ध स्वरूप के संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करना है।

मुख्य शब्द: *कीर्तन, उत्तर बिहार, भक्ति संगीत, नवधा भक्ति, लोक संस्कृति, आध्यात्मिकता*

परिचय

उत्तर बिहार का कीर्तन भक्ति, संगीत और लोकसंस्कृति का एक अद्भुत संगम है, जो सदियों से समाज की आध्यात्मिक चेतना को जीवित रखे हुए है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामूहिक भावनाओं, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक परंपराओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। सरल शब्दों, मधुर धुनों और सामूहिक गायन के माध्यम से कीर्तन व्यक्ति को आत्मिक शांति और ईश्वर से जुड़ने का अनुभव कराता है। समय के साथ इसके स्वरूप में परिवर्तन अवश्य आया है, परंतु इसकी मूल भावना आज भी लोगों के हृदय में जीवित है। यही कारण है कि उत्तर बिहार का कीर्तन न केवल एक संगीत परंपरा है, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक विरासत भी है।

मानव जीवन में संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि भावनाओं, संवेदनाओं और आध्यात्मिक अनुभूतियों का सबसे सशक्त माध्यम है। जब शब्दों की सीमा समाप्त हो जाती है, तब संगीत बोलता है—और जब संगीत भी अपनी चरम अवस्था पर पहुँचता है, तब वह भक्ति बन जाता है। उत्तर बिहार का *कीर्तन* इसी भक्ति-संगीत का अद्भुत उदाहरण है, जो सदियों से लोकजीवन में गहराई से रचा-बसा है। यह केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि जीवन की एक धारा है—जहाँ स्वर, लय और भाव मिलकर आत्मा को उस शांति और आनंद की अनुभूति कराते हैं, जिसकी तलाश में मनुष्य भटकता रहता है। कीर्तन का उद्देश्य केवल गाना नहीं, बल्कि ईश्वर का स्मरण करते हुए स्वयं को उस दिव्यता में विलीन कर देना है।

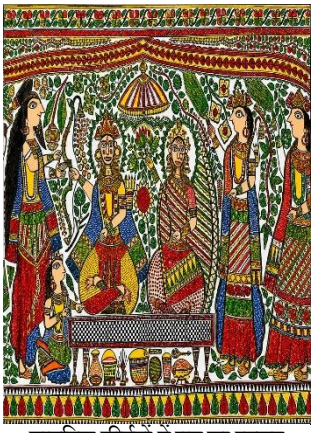
सामूहिक कीर्तनों में राम का स्वरूप

कीर्तन की उत्पत्ति और ऐतिहासिक विकास

कीर्तन की जड़ें भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में अत्यंत गहरी हैं। वैदिक युग से लेकर भक्ति आंदोलन तक, संगीत और ईश्वर-भक्ति का संबंध निरंतर सुदृढ़ होता गया। *नवधा भक्ति* में कीर्तन को एक प्रमुख साधन के रूप में स्थान दिया गया है—जहाँ ईश्वर के नाम, गुण और लीलाओं का गायन किया जाता है। मध्यकालीन भारत में जब भक्ति आंदोलन अपने उत्कर्ष पर था, तब संतों और भक्त कवियों ने कीर्तन को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दौर में *नाम-संकीर्तन* एक सामाजिक और आध्यात्मिक क्रांति के रूप में उभरा। उत्तर भारत के धार्मिक केंद्रों—अयोध्या, मथुरा, वृंदावन—से प्रेरित होकर यह परंपरा उत्तर बिहार में भी व्यापक रूप से फैल गई। उत्तर बिहार के गाँवों में कीर्तन धीरे-धीरे केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं रहा, बल्कि यह लोकजीवन का अभिन्न अंग बन गया। यहाँ के लोग अपनी दिनचर्या, त्योहारों और पारिवारिक आयोजनों में कीर्तन को शामिल करने लगे। इस प्रकार, यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती रही।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) । Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

सामूहिक कीर्तनों में राम का स्वरूप

उत्तर बिहार की सांस्कृतिक भूमि और कीर्तन

उत्तर बिहार अपनी समृद्ध लोकसंस्कृति, परंपराओं और आस्थाओं के लिए जाना जाता है। यहाँ का सामाजिक ढाँचा सामूहिकता और परस्पर सहयोग पर आधारित है, और कीर्तन इस सामूहिकता का एक सशक्त प्रतीक है। गाँवों की चौपाल, मंदिरों के प्रांगण, या किसी घर का आँगन—हर जगह कीर्तन की ध्वनि सुनाई देती है। यह केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक समागम भी होता है, जहाँ लोग एकत्रित होकर सामूहिक रूप से भक्ति का अनुभव करते हैं। कीर्तन के माध्यम से न केवल धार्मिक भावनाएँ प्रकट होती हैं, बल्कि यह लोकजीवन की विविधताओं को भी अभिव्यक्त करता है। इसमें स्थानीय भाषा, लोकधुन और पारंपरिक वाद्ययंत्रों का उपयोग इसे और भी जीवंत बना देता है।

संगीतात्मक संरचना: राग, ताल और लोकधुनों का समन्वय

उत्तर बिहार के कीर्तन की सबसे बड़ी विशेषता इसकी संगीतात्मक विविधता है। इसमें शास्त्रीय संगीत के तत्वों के साथ-साथ लोकधुनों का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। कीर्तन में प्रायः सरल रागों और सहज तालों का प्रयोग किया जाता है, ताकि हर व्यक्ति इसमें सहजता से भाग ले सके। *केहरवा*, *दादरा*, और *भजन ताल* जैसी लयें अधिक प्रचलित हैं। वाद्ययंत्रों में *ढोलक*, *मंजीरा*, *हारमोनियम* और *झांझ* का विशेष स्थान है। यह संगीत केवल तकनीकी दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं, बल्कि यह भावनात्मक स्तर पर भी गहराई से जुड़ा होता है। जब एक समूह एक स्वर में "हरे राम, हरे कृष्ण" या "राम नाम सत्य है" का उच्चारण करता है, तो वह वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर उठता है।

कीर्तन और सामूहिक चेतना

कीर्तन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी सामूहिकता है। यह एक ऐसा मंच है, जहाँ व्यक्ति अपने व्यक्तिगत अस्तित्व को भूलकर एक बड़े सामूहिक अनुभव का हिस्सा बन जाता है। इस सामूहिक गायन में न कोई बड़ा होता है, न छोटा; न कोई अमीर, न गरीब—सभी समान रूप से भाग लेते हैं। यही कारण है कि कीर्तन सामाजिक समरसता और एकता को बढ़ावा देता है। यह केवल आध्यात्मिक अनुभव ही नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुलन का भी साधन है। सामूहिक गायन से उत्पन्न सकारात्मक ऊर्जा व्यक्ति के तनाव को कम करती है और उसे आंतरिक शांति प्रदान करती है।

धार्मिक अनुष्ठानों में कीर्तन की भूमिका

उत्तर बिहार में लगभग हर धार्मिक अवसर पर कीर्तन का आयोजन होता है। चाहे वह जन्मोत्सव हो, विवाह हो, या कोई पर्व-त्योहार—कीर्तन हर अवसर को विशेष बना देता है। विशेष रूप से *भागवत कथा*, *रामचरितमानस पाठ*, और *सत्संग* जैसे आयोजनों में कीर्तन का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह न केवल धार्मिक अनुष्ठानों को जीवंत बनाता है, बल्कि श्रोताओं को भावनात्मक रूप से जोड़ने का कार्य भी करता है।

समकालीन परिवर्तन: परंपरा से प्रदर्शन तक

समय के साथ हर परंपरा में परिवर्तन स्वाभाविक है, और कीर्तन भी इससे अछूता नहीं रहा। आज के दौर में कीर्तन में कई नए प्रयोग और बदलाव देखने को मिलते हैं। जहाँ पहले यह केवल भक्ति और साधना का माध्यम था, वहीं अब इसमें मंचीय प्रस्तुति, आधुनिक वाद्ययंत्रों और तकनीकी उपकरणों का समावेश हो गया है। कुछ स्थानों पर यह एक पेशेवर गतिविधि के रूप में भी विकसित हो चुका है। हालाँकि यह परिवर्तन इसे अधिक आकर्षक और लोकप्रिय बनाते हैं, लेकिन इसके साथ-साथ इसकी मूल भावना पर भी प्रश्नचिह्न लगाते हैं। जब भक्ति की जगह प्रदर्शन और लोकप्रियता ले लेती है, तो उसकी आत्मा कमजोर पड़ने लगती है।

व्यावसायीकरण और उसके प्रभाव

आज कीर्तन के क्षेत्र में व्यावसायीकरण तेजी से बढ़ रहा है। कई कलाकार इसे आजीविका के साधन के रूप में अपनाते हैं, जो एक हद तक उचित भी है। लेकिन जब आर्थिक लाभ प्राथमिक उद्देश्य बन जाता है, तब भक्ति का भाव पीछे छूट जाता है। कुछ स्थानों पर कीर्तन केवल एक "शो" बनकर रह गया है, जहाँ भावनात्मक गहराई की बजाय मनोरंजन पर अधिक ध्यान दिया जाता है। यह प्रवृत्ति इस पवित्र परंपरा के लिए एक चुनौती बनती जा रही है।

नई पीढ़ी और कीर्तन

नई पीढ़ी का रुझान आधुनिक संगीत की ओर अधिक है, जिसके कारण पारंपरिक कीर्तन की लोकप्रियता में कुछ कमी आई है। हालांकि, यह पूरी तरह से नकारात्मक नहीं है। यदि कीर्तन को आधुनिक शैली में प्रस्तुत किया जाए, तो यह युवाओं को भी आकर्षित कर सकता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और ऑनलाइन कार्यक्रमों के माध्यम से इसे नई पहचान मिल सकती है।

संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता

कीर्तन जैसी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए समाज के सभी वर्गों को मिलकर प्रयास करना होगा। विद्यालयों और महाविद्यालयों में इसे पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इसे प्रोत्साहित करना, और नई पीढ़ी को इसकी महत्ता से परिचित कराना—ये सभी कदम इसके संरक्षण में सहायक हो सकते हैं।

भविष्य की दिशा: परंपरा और आधुनिकता का संतुलन

कीर्तन का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसे किस दिशा में ले जाते हैं। यदि हम इसकी मूल भावना को बनाए रखते हुए इसमें आवश्यक परिवर्तन करें, तो यह परंपरा और भी सशक्त होकर उभर सकती है। परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाना ही इसका सबसे बड़ा समाधान है। इससे न केवल इसकी लोकप्रियता बढ़ेगी, बल्कि इसकी आत्मा भी सुरक्षित रहेगी।

निष्कर्ष

उत्तर बिहार का कीर्तन केवल एक संगीत शैली नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा है, जो हमारी सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमें प्रेम, समर्पण और एकता का संदेश देता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इसकी महत्ता को समझें और इसे आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुँचाएँ। यदि हम ऐसा करने में सफल होते हैं, तो यह परंपरा सदैव जीवित रहेगी और समाज को आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करती रहेगी। कीर्तन केवल गाने की क्रिया नहीं, बल्कि जीने की कला है—एक ऐसा मार्ग, जो हमें हमारे वास्तविक स्वरूप से परिचित कराता है। जब तक मानव हृदय में भक्ति और प्रेम का भाव रहेगा, तब तक कीर्तन की ध्वनि भी अनवरत गूंजती रहेगी।

"जहाँ भाव, वहाँ भगवान" — और जहाँ भगवान, वहाँ कीर्तन।

संदर्भ

सिंह, गजेन्द्र नारायण, "बिहार की संगीत परम्परा", तक्षशिला पब्लिकेशन, 2015
उपाध्याय, कृष्णदेव, "लोक साहित्य की भूमिका", लोकभारती प्रकाशन, 2019
सिंह, विजय कुमार, "बिहार की संगीत परंपरा: एक अवलोकन", 2018

"Culture of Bihar." Bihar Online, 18 Feb. 2024, https://www.biharonline.in/guide/culture-of-bihar
चौधरी, उपेन्द्र कुमार, "बिहार के लोक गीतों का संकलन एवं उसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व", 2013–2014